

## चाणक्य नीति

•  
•  
•

301. मुझे वह दौलत नहीं चाहिए जिसके लिए कठोर यातना सहनी पड़े, या सदाचार का त्याग करना पड़े या अपने शत्रु की चापलूसी करनी पड़े.

I do not deserve that wealth which is to be attained by enduring much suffering, or by transgressing the rules of virtue, or by flattering an enemy.

302. जो अपनी दौलत, पकवान और औरते भोगकर संतुष्ट नहीं हुए ऐसे बहोत लोग पहले मर चुके हैं. अभी भी मर रहे हैं और भविष्य में भी मरेंगे.

Those who were not satiated with the enjoyment of wealth, food and women have all passed away; there are others now passing away who have likewise remained unsatiated; and in the future still others will pass away feeling themselves unsatiated.

303. सभी परोपकार और तप तात्कालिक लाभ देते हैं. लेकिन सुपात्र को जो दान दिया जाता है और सभी जीवो को जो संरक्षण प्रदान किया जाता है उसका पुण्य कभी नष्ट नहीं होता.

All charities and sacrifices (performed for fruitive gain) bring only temporary results, but gifts made to deserving persons (those who are Krishna consciousness) and protection offered to all creatures shall never perish.

304. घास का तिनका हल्का है. कपास उससे भी हल्का है. भिखारी तो अनंत गुना हल्का है. फिर हवा का झोका उसे उड़ाके क्यों नहीं ले जाता. क्योंकि वह डरता है कही वह भीख न मांग ले.

A blade of grass is light, cotton is lighter, the beggar is infinitely lighter still. Why then does not the wind carry him away? Because it fears that he may ask alms of him.

## चाणक्य नीति

2

305. बेइज्जत होकर जीने से अच्छा है की मर जाए. मरने में एक क्षण का दुःख होता है पर बेइज्जत होकर जीने में हर रोज दुःख उठाना पड़ता है.

It is better to die than to preserve this life by incurring disgrace. The loss of life causes but a moment's grief, but disgrace brings grief every day of one's life.

306. सभी जीव मीठे वचनों से आनंदित होते हैं. इसीलिए हम सबसे मीठे वचन कहे. मीठे वचन की कोई कमी नहीं है.

All the creatures are pleased by loving words; and therefore we should address words that are pleasing to all, for there is no lack of sweet words.

307. इस दुनिया के वृक्ष को दो मीठे फल लगे हैं. मधुर वचन और सत्संग.

There are two nectarean fruits hanging from the tree of this world: one is the hearing of sweet words (such as Krishna-katha) and the other, the society of saintly men.

308. पहले के जन्मों की अच्छी आदते जैसे दान, विद्यार्जन और तप इस जनम में भी चलती रहती है. क्योंकि सभी जनम एक श्रृंखला से जुड़े हैं.

The good habits of charity, learning and austerity practised during many past lives continue to be cultivated in this birth by virtue of the link (yoga) of this present life to the previous ones.

## चाणक्य नीति

3

309. जिसका ज्ञान किताबों में सिमट गया है और जिसने अपनी दौलत दूसरों के सुपुर्द कर दी है वह जरूरत आने पर ज्ञान या दौलत कुछ भी इस्तमाल नहीं कर सकता.

One whose knowledge is confined to books and whose wealth is in the possession of others, can use neither his knowledge nor wealth when the need for them arises.

310. वह विद्वान जिसने असंख्य किताबों का अध्ययन बिना सदगुरु के आशीर्वाद से कर लिया वह विद्वानों की सभा में एक सच्चे विद्वान के रूप में नहीं चमकता है. उसी प्रकार जिस प्रकार एक नाजायज औलाद को दुनिया में कोई प्रतिष्ठा हासिल नहीं होती.

The scholar who has acquired knowledge by studying innumerable books without the blessings of a bonafide spiritual master does not shine in an assembly of truly learned men just as an illegitimate child is not honoured in society.

311. हमें दूसरों से जो मदद प्राप्त हुई है उसे हमें लौटना चाहिए. उसी प्रकार यदि किसीने हमसे यदि दुष्टता की है तो हमें भी उससे दुष्टता करनी चाहिए. ऐसा करने में कोई पाप नहीं है.

We should repay the favours of others by acts of kindness; so also should we return evil for evil in which there is no sin, for it is necessary to pay a wicked man in his own coin.

312. वह चीज जो दूर दिखाई देती है, जो असंभव दिखाई देती है, जो हमारी पहुंच से बहार दिखाई देती है, वह भी आसानी से हासिल हो सकती है यदि हम तप करते हैं. क्यों की तप से ऊपर कुछ नहीं.

That thing which is distant, that thing which appears impossible, and that which is far beyond our reach, can be easily attained through tapasya (religious austerity), for nothing can surpass austerity.

## चाणक्य नीति

4

313. लोभ से बड़ा दुर्गुण क्या हो सकता है. पर निंदा से बड़ा पाप क्या है. जो सत्य में प्रस्थापित है उसे तप करने की क्या जरूरत है. जिसका हृदय शुद्ध है उसे तीर्थ यात्रा की क्या जरूरत है. यदि स्वभाव अच्छा है तो और किस गुण की जरूरत है. यदि कीर्ति है तो अलंकार की क्या जरूरत है. यदि व्यवहार ज्ञान है तो दौलत की क्या जरूरत है. और यदि अपमान हुआ है तो मृत्यु से भयंकर नहीं है क्या.

What vice could be worse than covetousness? What is more sinful than slander? For one who is truthful, what need is there for austerity? For one who has a clean heart, what is the need for pilgrimage? If one has a good disposition, what other virtue is needed? If a man has fame, what is the value of other ornamentation? What need is there for wealth for the man of practical knowledge? And if a man is dishonoured, what could there be worse in death?

314. समुद्र ही सभी रत्नों का भण्डार है. वह शंख का पिता है. देवी लक्ष्मी शंख की बहन है. लेकिन दर दर पर भीख मांगने वाले हाथ में शंख ले कर घूमते हैं. इससे यह बात सिद्ध होती है की उसी को मिलेगा जिसने पहले दिया है.

Though the sea, which is the reservoir of all jewels, is the father of the conch shell, and the Goddess of fortune Lakshmi is conch's sister, still the conch must go from door to door for alms (in the hands of a beggar). It is true, therefore, that one gains nothing without having given in the past.

315. जब आदमी में शक्ति नहीं रह जाती वह साधू हो जाता है. जिसके पास दौलत नहीं होती वह ब्रह्मचारी बन जाता है. रुग्ण भगवान् का भक्त हो जाता है. जब औरत बूढ़ी होती है तो पति के प्रति समर्पित हो जाती है.

## चाणक्य नीति

•••  
5

When a man has no strength left in him he becomes a sadhu, one without wealth acts like a brahmachari, a sick man behaves like a devotee of the Lord, and when a woman grows old she becomes devoted to her husband.

316. साप के दंश में विष होता है. कीड़े के मुह में विष होता है. बिच्छू के डंख में विष होता है. लेकिन दुष्ट व्यक्ति तो पूर्ण रूप से विष से भरा होता है.

There is poison in the fang of the serpent, in the mouth of the fly and in the sting of a scorpion; but the wicked man is saturated with it.

317. जो स्त्री अपने पति की सम्मति के बिना व्रत रखती है और उपवास करती है, वह उसकी आयु घटाती है और खुद नरक में जाती है.

The woman who fasts and observes religious vows without the permission of her husband shortens his life, and goes to hell.

318. स्त्री दान दे कर, उपवास रख कर और पवित्र जल का पान करके पावन नहीं हो सकती. वह पति के चरणों को धोने से और ऐसे जल का पान करने से शुद्ध होती है.

A woman does not become holy by offering by charity, by observing hundreds of fasts, or by sipping sacred water, as by sipping the water used to wash her husbands feet.

## चाणक्य नीति

6

319. एक हाथ की शोभा गहनों से नहीं दान देने से है. चन्दन का लेप लगाने से नहीं जल से नहाने से निर्मलता आती है. एक व्यक्ति भोजन खिलाने से नहीं सम्मान देने से संतुष्ट होता है. मुक्ति खुद को सजाने से नहीं होती, अध्यात्मिक ज्ञान को जगाने से होती है.

The hand is not so well adorned by ornaments as by charitable offerings; one does not become clean by smearing sandalwood paste upon the body as by taking a bath; one does not become so much satisfied by dinner as by having respect shown to him; and salvation is not attained by self-adornment as by cultivation of spiritual knowledge.

320. टुंडी फल खाने से आदमी की समझ खो जाती है. वच मूल खिलाने से लौट आती है. औरत के कारण आदमी की शक्ति खो जाती है, दूध से वापस आती है.

The eating of tundi fruit deprives a man of his sense, while the vacha root administered revives his reasoning immediately. A woman at once robs a man of his vigour while milk at once restores it.

321. जिसमे सभी जीवों के प्रति परोपकार की भावना है वह सभी संकटों पर मात करता है और उसे हर कदम पर सभी प्रकार की सम्पन्नता प्राप्त होती है.

He who nurtures benevolence for all creatures within his heart overcomes all difficulties and will be the recipient of all types of riches at every step.

322. वह इंद्र के राज्य में जाकर क्या सुख भोगेगा....

जिसकी पत्नी प्रेमभाव रखने वाली और सदाचारी है.

जिसके पास में संपत्ति है.

# चाणक्य नीति

7

जिसका पुत्र सदाचारी और अच्छे गुण वाला है.

जिसको अपने पुत्र द्वारा पौत्र हुए है.

What is there to be enjoyed in the world of Lord Indra for one whose wife is loving and virtuous, who possesses wealth, who has a well-behaved son endowed with good qualities, and who has a grandchildren born of his children?

323. मनुष्यों में और निम्न स्तर के प्राणियों में खाना, सोना, घबराना और गमन करना समान है. मनुष्य अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है तो विवेक ज्ञान की बदौलत. इसलिए जिन मनुष्यों में ज्ञान नहीं है वे पशु है.

Men have eating, sleeping, fearing and mating in common with the lower animals. That in which men excel the beasts is discretionary knowledge; hence, indiscreet men who are without knowledge should be regarded as beasts.

324. यदि मद मस्त हाथी अपने माथे से टपकने वाले रस को पीने वाले भौरों को कान हिलाकर उड़ा देता है, तो भौरों का कुछ नहीं जाता, वे कमल से भरे हुए तालाब की ओर खुशी से चले जाते हैं. हाथी के माथे का शृंगार कम हो जाता है.

If the bees which seek the liquid oozing from the head of a lust-intoxicated elephant are driven away by the flapping of his ears, then the elephant has lost only the ornament of his head. The bees are quite happy in the lotus filled lake.

325. ये आठो कभी दुसरो का दुःख नहीं समझ सकते ...

१. राजा २. वेश्या ३. यमराज ४. अग्नि ५. चोर ६. छोटा बच्चा ७. भिखारी और ८. कर वसूल करने वाला.

# चाणक्य नीति

8

A king, a prostitute, Lord Yamaraja, fire, a thief, a young boy, and a beggar cannot understand the suffering of others. The eighth of this category is the tax collector.

326. हे महिला, तुम निचे झुककर क्या देख रही हो? क्या तुम्हारा कुछ जमीन पर गिर गया है?

हे मुख, मेरे तारुण्य का मोती न जाने कहा फिसल गया.

O lady, why are you gazing downward? Has something of yours fallen on the ground?  
(She replies) O fool, can you not understand the pearl of my youth has slipped away?

327. हे केतकी पुष्प! तुममे तो कीड़े रहते हैं. तुमसे ऐसा कोई फल भी नहीं बनता जो खाया जाय. तुम्हारे पत्ते काटो से ढके हैं. तुम टेढ़े होकर बढ़ते हो. कीचड़ में खिलते हो. कोई तुम्हे आसानी से पा नहीं सकता. लेकिन तुम्हारी अतुलनीय खुशबु के कारण दुसरे पुष्पों की तरह सभी को प्रिय हो. इसीलिए एक ही अच्छाई अनेक बुराइयों पर भारी पड़ती है.

O ketki flower! Serpents live in your midst, you bear no edible fruits, your leaves are covered with thorns, you are crooked in growth, you thrive in mud, and you are not easily accessible. Still for your exceptional fragrance you are as dear as a kinsmen to others. Hence, a single excellence overcomes a multitude of blemishes.

दोस्तों चाणक्य के आगे के सूत्र आप यहाँ से डाउनलोड कर सकते हैं.

1. डाउनलोड > [चाणक्य नीति पार्ट 2- Chanakya Quotes \[51-100\]](#)
2. डाउनलोड > [चाणक्य नीति पार्ट 2- Chanakya Quotes \[51-100\]](#)
3. डाउनलोड > [चाणक्य नीति पार्ट 3- Chanakya Quotes \[101-150\]](#)



## चाणक्य नीति

9

4. डाउनलोड > चाणक्य नीति पार्ट 4-Chanakya Quotes [151-200]
5. डाउनलोड > चाणक्य नीति पार्ट 5-Chanakya Quotes [201-250]
6. डाउनलोड > चाणक्य नीति पार्ट 6-Chanakya Quotes [251-300]
7. डाउनलोड > चाणक्य नीति पार्ट 7-Chanakya Quotes [301-350]

सम्पूर्ण चाणक्य नीति पढने के लिए यहाँ क्लिक करें